B.A. I Hindi Hons. के छात्रों हेतु

'मलबे का मालिक' कहानी का सारांश :-

डॉ० सतीश चन्द्र पाठक, हिंदी विभाग

इस कहानी के मुख्यतः दो पात्र हैं - गनी मियां और रक्खा पहलवान। भारत विभाजन के बाद गनी मियां पाकिस्तान चला गया है और आज हॉकी मैच देखने के बहाने अमृतसर आकर बाजार बांसा के अपने घर को देखने आया है। पहले तो उसे लगता है कि इतने दिनों में सब कुछ बदल गया है किन्तु गलियों बच्चे लड़के और आपस में लड़ती औरतों को देखकर उसे लगता है कुछ भी नहीं बदला है। उसे उसी मुहल्ले का किशोर मनोरी उसे सहारा देकर उसके जले हुए घर के पास पहुंचा देता है। उस घर के मलबे को देखकर उसका मन दुःख और पीड़ा से भर जाता है और अपने बेटे चिरागा और बेटी तथा पत्नी को याद कर बिलख-बिलखकर रोने लगता है। गनी मियां एक अत्यंत संवेदनशील व्यक्ति है जिसके जीवन में तमाम तरह की मुश्किलें आती हैं। कहानीकार ने गनी मियां के माध्यम से तत्कालीन स्थितियों में पीड़ित होने वाले लोगों की कारुणिक स्थितियों का कारुणिक वर्णन किया है।

गनी बड़ा ही स्नेहिल इंसान है। जैसे ही रक्खा पहलवान से उसकी भेंट होती है वह उससे मिलने के लिए अपनी बाहें फैलाकर उसकी ओर बढ़ता है। किन्तु ~~रक्खा~~ रक्खा के ठंडे व्यवहार के कारण ऐसा नहीं कर पाता। इतने दिन बीत जाने के बाद भी रक्खा के प्रति उसके मन में आस्था और विश्वास बना हुआ है। उसे नहीं पता कि उसने उसके परिवारजनों की हत्या की थी। गनी रक्खा से ही उस घटना की जानकारी लेता है। रक्खा के ऊपर उसका अटूट विश्वास रक्खा को भी भीतर से आन्दोलित कर देता है। गनी का यह कहना कि तुम्हें देख ~~लिया~~

लिया तो चिराग को देख लिया। रक्खा को भी हिला देता है और उसकी भी संवेदना जाग उठती है।

गनी को अपनी जन्मभूमि से बहुत प्यार है। यद्यपि अब वह पाकिस्तानी बन चुका है किन्तु अमृतसर का उसका घर उसकी जन्मभूमि है जिसे वह छोड़ना नहीं चाहता। वह अपने घर की मिट्टी को अपने माथे पर डाल कर अपनी आत्मा को तृप्त करने का प्रयास करता है और बड़े भारी मन से वापस लौटता है।

रक्खा पहलवान बड़ा ही लालची, स्वार्थी एवं क्रूर व्यक्ति है। वह अपने मुहल्ले का दादा है। लोग उससे सहमते हैं अतः उससे मुंह नहीं लगाते। उसकी दृष्टि में किसी की भी मां-बहन का लिहाज नहीं है। वह इतना स्वार्थी है कि गनी मियां के नये घर को हड़प जाना चाहता है। उसे इस विभाजन के समय इसका मौका भी मिल जाता है और दंगों की आड़ में वह गनी के जवान बेटे चिराग को उसके घर से बुलाकर उसकी हत्या कर देता है। उसके साथ ही उसके सारे परिवार की भी हत्या कर देता है। उसकी लोभ जन्य क्रूरता की कोई सीमा नहीं है। वह अपने मुहल्ले में सांड की तरह घूमता है कोई उससे बोलने का साहस नहीं करता। उसके भीतर मानवीय संवेदनाओं का घोर अभाव है तभी तो किसी की हत्या कर देना उसके लिए सामान्य सी बात है। उसकी यह क्रूरता तब और बेबाक हो जाती है जब उस पर सर्वाधिक भरोसा करने वाले को ही वह मार देता है।

रक्खा एक व्यवहार शून्य पात्र है। गनी जब उसे देखता है तो उससे मिलने के लिए हुमक कर आगे बढ़ता है किन्तु रक्खा उससे बड़े ही रूखेपन से व्यवहार करता है। किन्तु जब गनी उससे अपने परिवार की हत्या के बारे में पूछता है तब उसकी बोलती बन्द हो जाती है। गनी का उसका

अपने ऊपर भरोसा और विश्वास देखकर वह आत्मग्लानि से भर उठता है। आत्मग्लानिवश उसका मुँह सूख जाता है और जीभ तालू से चिपक जाती है। ऐसे ही क्षणों में उसे भगवान की याद आने लगती है। गनी जब वापस जाने लगता है तब तक इसके आत्म की स्थिति ऐसी हो जाती है कि गनी के सामने उसके दोनों हाथ जुड़ जाते हैं।

रक्खा स्वार्थ, निर्ममता और दुष्प्रवृत्ति की ऐसी प्रतिमूर्ति है जो समाज में सर्वत्र दिखलाई पड़ जाया करती है। ऐसे लोग समाज के लिए एक ऐसे कलंक के समान हैं जिनसे मानवता शर्मसार होती है।

कहानीकार ने बड़ी कौशलता से इन दोनों के चरित्रों पर प्रकाश डाला है। गनी और रक्खा के व्यवहारों एवं शारीरिक परिवर्तनों के द्वारा उनकी चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालना मोहन राकेश के चरित्र-चित्रण की अद्भुत विशेषता है। यद्यपि गनी और रक्खा व्यक्ति चरित्र हैं फिर भी उनमें प्रतिनिधि पात्र होने की सारी विशेषताएँ भी हैं। दंगों की आड़ में ऐसे आतंकवादी रक्खा को भिन्न नाम से सर्वत्र देखा जा सकता है, चाहे वह गुजरात का दंगा हो या कश्मीर का या सिक्खों का। स्थान और नाम बदल जाते हैं किन्तु दंगे के पीछे का चरित्र नहीं बदलता। रक्खा ऐसा ही आततायी चरित्र है। दंगे की आग में अपना सब कुछ होम कर देने वाला गनी भी प्रतिनिधि पात्र का सुन्दर उदाहरण है। जहाँ भी दंगा होगा वहाँ गनी और रक्खा अपना नाम बदलकर नये नाम के साथ मिल ही जाएंगे क्योंकि इनके बगैर दंगों की संभावना नहीं बन पाती।